साहित्यिक ब्रजभाषा में आधुनिक बोधयुक्त नवीन प्रयोग

*अक्षांश भारद्वाज

प्रस्तावना:- 'ब्रजभाषा' हिन्दी साहित्य की धारा के रूप में अग्रगण्य स्थान रखती है। एक ऐसी भाषा जिसने हिन्दी साहित्य को भाषा के रूप में कई आयामों को जन्म दिया। अपने औदात्य और लालित्यमयी स्वरूप से इसने कई काव्यों की धारा को मूक वेग प्रदान किया।

संसार में शायद ही ऐसी रचना सारणी और मिले जो अपने चरित्रों का पर्याय हो जाए, केवल ब्रजभाषा को छोड़कर हिन्दी की ही बात करें तो खड़ी बोली की सम्यक् प्रतिष्ठा से पूर्व साहित्य के तीन प्रधान अभिव्यक्ति माध्यम दृष्टिगत होते हैं- राजस्थानी, अवधी व ब्रजभाषा।

राजस्थानी प्रधानतः शौर्याभिव्यंजक रही,अवधी में रामकाव्य एवं प्रेमाख्यानक काव्य की सुदीर्घ परम्परा रही।ब्रजभाषा कृष्ण काव्य की प्रधान भाषा रही। ऐसा नहीं कि ब्रज में कृष्णकाव्येतर अभिव्यक्ति नहीं हुई पर ब्रजक्षेत्र की तरह ब्रजभाषा भी राधा-कृष्ण का पर्याय सा हो गई है। यह सुखद विस्मय का विषय है।चरित नायक तो अवधी और ब्रज दोनों के शब्दमानस के अंगभूत हो गए पर भाषिक विस्तार ब्रज का ही अधिक रहा और यह तथ्य मध्यकाल में ही लक्षित कर लिया गया था- 'ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानो...।'

स्वाभाविक तौर पर देखा जाये तो ब्रज भाषा में लिखे गये काव्य कई वरिष्ठ कविताओं के सम्मोहन की आधारशिला बने और भक्तिकाल रीतिकाल के कई ऐसे हजारों वरिष्ठ कवियों को काव्य लिखने के लिए अनुप्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप ब्रजभाषा के काव्य पृष्ठों की संख्या में न केवल वृद्धि हुई,साथ ही उन्होंने अपनी वरिष्ठ काव्य संपदा से हिन्दी साहित्य के कोष को सम्पन्नता प्रदान कर भक्तिकाल के वरिष्ठ कवियों का उदय किया।

उद्देश्य:- ''भक्तिकाल में सूर, तुलसी के साथ ऐसे कई कवि और आचार्य हुये जिन्होंने अपने साहित्य को मुख्य रूप से ब्रजभाषा में ही रचने का निश्चय जताया। मुख्य रूप से पुष्टि मार्ग के महापुरुष विठ्ठलनाथ जी के द्वारा ब्रजभाषा कवियों को एकत्र कर अष्टछाप की स्थापना की गई।"(1) जिसने ब्रजभाषा को राग और रस से जोड़ कर एक नये वैविध्यपूर्ण आयाम की ओर अग्रसर किया। जो साहित्य और संगीत के उच्चस्थान के मापदण्डों पर आधारित था तथा यही कीर्तन पद सामान्य लोगों द्वारा पारिवारिक परिवेश में भी अनुलक्षित रहे।

ब्रजभाषा के ब्रजेतर क्षेत्रों- सुदूर बंगाल,आसाम,राजस्थान,गुजरात,पंजाब आदि में सहर्ष स्वीकार का क्या कारण है? कह सकते हैं ब्रज के माधुर्य ने अपनी व्याप्ति को संभव किया। पर प्रश्न है यह माधुर्य आया कहाँ से? यह आकर्षण पैदा कैसे हुआ? इसका उत्तर ब्रजभाषा काव्य के पास है। ब्रज का आकर्षण कृष्णाकर्षण के समान है और ब्रजभाषा का माधुर्य वंशी माधुर्य के समान हृदय जीत लेने वाला है।'या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरोंगी।'की शपथ को ब्रज ने इतनी बार और इतनों से तुड़वाया है कि कुछ न पूछो जैसे कृष्ण मुरली की धुन पर गोपियाँ दौड़ पड़ती थीं।वैसे ही ब्रज के भाषिक व चरित माधुर्य से खिंच कर बंगाल(चैतन्यादि),पंजाब(गुरुनानक से गुरुगोविंद सिंह तक),राजपूताना तलवार छोड़कर(भीम)और गुजरात(नरसी मेहता)भी मगन होकर दौड़ पड़ा।

मध्यकाल जब विराग का स्वर अलाप रहा था,निवृत्ति को अपरिहार्य बता रहा था।और समवेत स्वर में संसार को कागज की पुड़िया और नारी को कामिनी तथा साधना पथ की बाधा बता रहा था।तब ब्रजभाषा काव्य सारे निषेधों को धता बताकर स्वीकार की सारंगी बजा रहा था।लोग 'लुकाटी हाथ लिए' निज घर जलाकर ईश्वर को पाने निकले थे लेकिन ब्रजभाषा के कवियों में ईश्वर था,लोरी के स्वर में ईश्वर था, माखन की जूठन और किशोरियों की रूठन में ईश्वर आकर समा गया था।सिर पर मटकी लेकर गोपियाँ पनघट पर चलीं तो नदी किनारे ईश्वर,लता-विटप में ईश्वर ! शायद ही किसी साधना पद्धति ने मान रूपों में ईश्वर की इतनी जीवंत भावना की होगी। क्या कारण है कि 'तेरा साँईं तुज्झ में ज्यों पुहुपन में बास' सुनकर भी घट में ईश्वर की साक्षात् प्रतीति नहीं होती।'सियाराम मय सब जग जानी' की सच्चाई को जानकर भी जगत् में उनकी व्याप्ति की जीवंत बोध नहीं होता पर 'घुटरनु चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये'कान्हा 'खेलत खात फिरे अंगना'प्रत्यक्ष-सा दिखता है?

इसी दृष्टि को अपनाते हुए उक्त लेख में हम ब्रजभाषा काव्य की लालित्यमयी परंपरा और आधुनिक बोधयुक्त नवीन प्रयोग को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

मूल विषय वस्तु का विश्लेषण :- ब्रजभाषा की आधारशिला रचनाओं में ग्रामीण संस्कृति से लेकर नगर सभ्यता के अभिनव पड़ावों तक ब्रजभाषा का वर्चस्व बना रहा।

"अष्टछाप के कवियों ने ब्रजभाषा काव्य की छवि को इस तरह से समाज के आगे रखा कि ये भजन गायन तक सीमित न रही अपितु उस कीर्तन,गायन को वरिष्ठ परम्परा से जोड़कर उसे अभिजातीय गरिमा प्रदान कर इसे धर्म सम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा स्पर्शित करवा के गाँव की कच्ची पगडंडियों से लेकर नगर के राजमार्गों तक प्रसारित किया।"(2)

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने ब्रजभाषा की व्यापक महत्ता को स्वीकार करते हुये लिखा है कि"धीरे-धीरे मध्यदेश की दो

भाषाएँ अपभ्रंश की वारिस बनी। आगरा,मथुरा और ग्वालियर की ब्रजभाषा,और दिल्ली की खड़ी बोली।"(3)

इस तरह से ब्रजभाषा की काव्य परम्परा और इतिहास का सम्बन्ध पुराना होने के साथ-साथ कई संदर्भों पर आधारित रहा है। चूँकि ब्रजभाषा की परिपक्वता यह रही कि इसने प्रत्येक भाषा के बीच रहते हुये अपनी लालित्यमयी छटा को बिखेरे रखा।"बंगाल से महाराष्ट्र तक ब्रजभाषा कविता, संगीत और राधाकृष्ण विषयक और वैष्णव शास्त्र ग्रन्थों की भाषा बनी। ठीक उसी प्रकार कवि भूषण ने अपनी ओजमयी ब्रजभाषा में महाराष्ट्र कुलभूषण हिन्दू तिलक श्री शिवराज शिवाजी की प्रशस्ति की,जो शिवाजी महाराज के लिए उद्दीपनमय अनुप्राणना बनी। मराठे'पोवड़ा'या युद्धगीत के लेखक लोग भी कभी कभी ब्रजभाषा या दूसरी मध्यदेशीय भाषा का व्यवहार करते रहे हैं। सिक्ख गुरुओं को धर्मोपदेश की भाषा तो अपने मूल में ब्रज खड़ी बोली ही है।" (4)

भक्तिकाल के इन पद रचनाकार कवियों ने ब्रजभाषा को ही काव्य का माध्यम स्वीकार किया और इनके अनुरूप ही वर्ण्य विषय भी अधिकतर रचनाकारों द्वारा स्वीकार किया गया। इस काल के कवियों द्वारा कृष्ण के बाल रूप के साथ-साथ युवा स्वरूप,उनके रूप-रास,प्रेमलीला को काव्य की परम्परा में स्थान देकर एक नया बदलाव किया गया।पहले भक्ति की कविता लिखी जाती थी किंतु इन कविताओं से शृंगारिक काव्य परम्परा का चलन प्रतिस्थापित हुआ।(5) भक्तिपरक रचनाओं के माध्यम से कई विभिन्नताएं यहाँ देखने को मिलने लगी। भक्ति भाव के प्रतिभाव को शिव और गणपति के माध्यम से निम्न पंक्तियों में बाललीला के अन्तर्गत देखा जा सकता है:-

"गजानन षडानन खेले शिवधाम माहि
गजानन रोवत हो अम्बा यों पुकारी है।
क्यों रे षडानन गजानन काहे रौवत है,
बोले है गणेश मातु शुद्र नाम डारी है।
क्यों रे स्कंध माने नाय षडानन बोलें यों.
नेने ये गिनत मेरे ऊधमी सुभारी है।
दोनों की बात सुनि शिवा हँस दीनी सत्य,
प्रेम भरी लीला यही रक्षक हमारी है।"(6)

इस काव्य में कवि ने गणपति की बाललीला का वर्णन करने के साथ-साथ शिव की शक्ति का निरूपण भी किया है। यहाँ पर कवि ने बाल-लीला के अन्तर्गत गणेश का रोना जिस तरह से अंकित किया है वह अपने आप में शोभनीय और

भक्तिभाव की पूर्णता को व्यक्त करता है। इस प्रकार के प्रयोग परम्परा के वृत्त में रहकर भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाते हैं।अधिकतर ब्रजभाषा में काव्य का वर्ण्य विषय कृष्णलीला तक ही सीमित है,किंतु यहां गणेशजी का बाललीला का वर्णन विषय की मौलिकता को प्रतिपादित करता है। कवि 'जसकरण खिडिया' ने शिवमहिमा का गुणगान करते हुये दोहा,कुण्डली,त्रोटक,भुजंगप्रयात,सवैया,कवित्त आदि प्रचुर मात्रा में प्रणीत किये हैं। उदा:-

" गिरिराज सुता सुत के गुन कौ,
सहसानन सन्तन गान करें।
पर पार उसे न मिला अब लौं
इक आस कहाँ किम पार परें।
बरदायक बारन आनन कौ,
सुभ नाम सदा जन जो सुमिरें।
उनका नहि काम अपूर्ण रहे
सब बाधक विघ्न समूल हरें।। " (7)

उक्त काव्य की पंक्तियों की नवीनता ही इस तथ्य की पुष्टि करता है कि बदलते हुये परिवेश में आयामों में भी बदलाव का आना स्वाभाविक रहा। अलंकारों की विविधता भी काव्य की पंक्ति को नया वेग प्रदान करते नजर आती है।भक्ति-भाव की परम्परा के अन्तर्गत वंदना प्रसंग परम्परा का भी निरूपण हुआ है।

सरस्वती वंदना,गणेश वंदना इत्यादि में भक्ति का ही रूप है जिससे कि समाज के प्रति भी भक्ति के माध्यम से इस परम्परा को नवीनता प्रदान करते हैं।

"मेरे हृदय में आय आसन लगा कै मातु,
अपनी पताका को ऊंची फहरा दै तू।
मेरे शब्दों की पुष्प वाटिका सजा कै रम्य
भ्रमर भ्रमा दै औ' सुगन्धि सरसा दै तू। "(8)

प्रकृति के साथ भक्ति का अनूठा संगम होने के कारण काव्य में प्रकृति के प्रेम के प्रति भक्तिभाव को दर्शाते हुये कृष्ण के विचारों को भी परिलक्षित किया है। निम्न पंक्तियां द्रष्टव्य हैं:-

"हौं नहि भक्ति आसक्ति में जूझत,

हौ नहि पास उपासन जैहौं।

साँच कहौं हौं सखा बनि के,

ब्रज साँवरे के संग गाय चरैहों।।" (9)

उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि डॉ.विष्णु विराट ने भक्तिभाव की अनुकम्पा को बनाये रखते हुए निर्गुणभक्ति को भक्ति की परम्परा में एक नया अध्याय जोड़ते हुए कहा है कि"मैं किसी भक्ति और शक्ति में अपने को उलझा कर नहीं रखना चाहता किन्तु मंदिर की सेवा चाकरी करना या फिर प्रसाद के लिए अपने भाव को व्यक्त करना उचित नहीं है।अतः सच ये है कि मैं अपने ब्रज साँवरे अर्थात् कृष्ण के साथ गाय ही चराऊँ।"भक्ति काव्य की परम्परा में कविता के तौर पर कई अन्य प्रयोग भी हुए। जिनके अन्तर्गत भक्ति काव्य में रीतिकालीन काव्य का चित्रण भी देखने को मिलता है।' कविवर नवनीत चतुर्वेदी के काव्य का उदाहरण द्रष्टव्य है:-

"बीतन लगे है लरिकाई के कछूक दिन

आवन लगी है,तरुनाई एक ओर तैं।

नवनीत जैसी कटि छीनता लगी है देन

नैन तिरछान लगे अजब मरोर तैं।"

"लाज औ मनोज ही के मोरचे मिलन लागे

अंचल उचन लागे कुचन की कोर तें । " (11)

उपर्युक्त पंक्तियों में भक्ति के तत्त्व तो हैं ही लेकिन साथ में रीतिकालीन श्रृंगारी प्रभाव होने के कारण काव्य की परम्परा में कवि का भक्ति श्रृंगार संवलित होता है। आधुनिक ब्रजभाषा के अन्तर्गत कई परिवर्तनों का प्रारूप देखा जा सकता है। पूर्ण रूप से इस तथ्य की पुष्टि नहीं होती है कि काल की मीमांसा के कारण ही काल में परिवर्तन आया कि बदलते हुये परिवेश के आयामों में राधाकृष्ण के प्रेम को भी भक्तिकाल की संज्ञा से शोभित करने के पश्चात श्रृंगार पक्ष का स्वरूप भक्तिकाल के भाव पक्ष में दिखाई देने लगा।

काव्य रचना में परिवर्तन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि भक्तिभाव के पक्ष में जो काव्य ब्रजभाषा में लिखे जाते थे उसमें प्राचीनकाल के ऐसे विचारों का श्रीगणेश हुआ जिनसे की 'भक्तिभाव में भोग विलासता' का भाव प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ने लगा।' (12)

बदलते युग के परिप्रेक्ष्य में ब्रजभाषा में कई प्रयोग होते दिखाई पड़ते है।अंग्रेजी शासक और उसकी हुकूमत को विध्वंस करने के लिए विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना अनिवार्य हो गया था अतः उस अनिवार्यता की पूर्ति करने के लिए कई कवि अपनी काव्य शैली परम्परा को तोड़ते हुए कई प्रयोग करते हुये दिखलाई देते हैं,जिससे नीति काव्य का जन्म हुआ। चूंकि रीतिकाल में नीति को प्रतिपाद्य की श्रेणी में रख कर कई कलात्मक एवं साहित्यिक रचनाएं हुईं।कवि गिरधर कविराय तथा दीनदयाल गिरि नीति काव्य के उच्च कवि के रूप में नजर आते है।आधुनिक ब्रजभाषा की संगोष्ठी में यह कहना गलत नहीं होगा कि भक्त कवियों का नीति-काव्य उपदेशक है क्योंकि उनकी उक्तियों में स्पष्टता,अनुभूत तथ्य कथन एवं स्वमत् आग्रह विशेष रूप से दिखाई देता है। उदाहरण:-

"खोटे हाकिम के निकट करै न्याय की आस,
बधिक वेरिया में कहाँ, मधु मालती सुवास ।
लाभ करन कौं जाय,जो लोभी नर के पास
कहाँ जेठ की धूप में बेधन बिज्जू प्रकास।" (13)

नीति की बात को कई कवियों ने अपने अनुसार ही रखा हैं,अपने विचारों को सांसारिक व्यावहारिकता का परिचालन करते हुये 'कवि मंशी मटोलसिंह' नीति की बात के अन्तर्गत उक्त पंक्ति द्वारा अपने विचारों को लोकसभा के साथ जोड़ते हुए कहते हैं कि

''भले बुरे किन कूँ कहै,दोऊ एक समान
भले बुरे की होत है,कर्मन ते पहचान ।" (14)

वहीं दूसरी तरफ कहते है कि :

"दुष्ट त्रिया सठ मित्र हो,अरु प्रतिवादी दास
पुत्र कुटिल घर में सरप,सदा काल की वास।''

इस प्रकार नीति काव्य में कई विभिन्नताओं की झलक समयावधि के साथ दृष्टिगोचर होती है।इन दोहों में राजनीति स्तर.व्यावहारिक स्तर,सांसारिक स्तर का बोध कराया गया है।श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी,श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखा' ने नीति के माध्यम से बचपन और युवा अवस्था, राजनीतिक परिवेश और जीवन के सशक्त माप दण्डों का वर्णन बखूबी किया है। जैसे:-

"रहिमन पैसा राखिए,बिन पैसा सब सून।

मिलै नाहिं पैसा गए, मान बसन घर लून।।'' (15)

'मुक्तक परम्परा के पोषक छंदो, सवैया एवं दोहों के सुष्ठु प्रयोग इस युग में ही संभव हुए क्योंकि इन कवियों ने ब्रजभाषा को नया शृंगार दिया।'(16) अंग्रेजों की निंदा,राष्ट्रप्रेम,समाज सुधार,जाग्रति,गौवध-निषेध, देशोन्नति एवं पतन के कारण, राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों में काव्य रचना होने लगी। चूँकि बदलते युग का प्रभाव भी कवियों पर पड़ रहा था। द्रष्टव्य है:-

"लूटे देस-देस के नरेसन को दंड ले कै,

टिकट बगाई धर धरना कूँ ले गए।

बीस-बीस खोलि कें कचैरिन के कारखाने

पूरे पापी अफसर पुलिस हू के ह्वै गए।'' (17)

1850 ई. के आस-पास ब्रजभाषा काव्य का विकास भक्ति और शृंगार के क्षेत्र में हटकर समाज सुधार और राष्ट्रप्रेम से जुड़ने लगा और यहाँ से आधुनिक बोध के युग का प्रारम्भ होता है। (18) आधुनिक युग में रचे गये ब्रजभाषा काव्य को तीन भागों में विभक्त किया गया है:- 1.पूर्व भारतेन्दु युग. 2.भारतेन्दु युग और 3.उत्तर भारतेन्दु युग ।

पूर्व भारतेन्दु युग में ग्वाल, दीनदयाल गिरि,कविरत्न नवनीत,गोविन्द आदि का उल्लेख किया जा सकता है।इनमें भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द्र ब्रजभाषा काव्य रचना में आधुनिक बोध के समर्थ रचनाकारों में आते है।

बदलते युग के प्रभाव में आकर कई कवियों ने विषय की भंगिमा में स्वयं के विचारों को परिवर्तित कर,समस्या पूर्ति,भ्रष्टाचार,राष्ट्रप्रेम,एकता और सद्भावना,घूसखोरी,संस्कृति और त्योहारों का काव्य सर्जन बड़ी ही सहजता के साथ किया है। (19)

आधुनिक समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए डॉ. सुधांशु भारत की दुर्दशा का चित्रण उक्त काव्य में करते हुये कहते हैं कि,

"सासन फैंकि विदेश कौ,भारत भयौ स्वतंत्र

जन अधिकारन कारने,देस भयौ गन तंत्र।"

"मँहगाई बढ़ती गई नित सुरसा की भाँति।

कोई हल निकर्यो नहीं, बढ़ी समस्या पाँति।"

डॉ. विष्णु विराट ने आज की विशृंखलित व्यवस्था को दोहे, विम्ब,प्रतीक,अन्योक्ति एवं समासोक्ति में वर्णित किया है। द्रष्टव्य है:-

"टका-टका से बैंगना,आज भार अनमोल।
नीम करेला चढि गए,वे मिसरी से बोल।।
कुर्सी पे कुर्सी चढ़ी,चढ़ी चाम पै चाम।
या उधार के चाम कौ,कैसो ऊंचौ दाम।।" (20)

कवि रामदास गुप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य करते हुए कहते है कि

"बरसे न कहूं गरजौ ही करें,तु भरिंगे ये ताल तलैया कहाँ?
पकवान भरे इन चौकन कूँ तजि जाइंगे चोर विलैया कहाँ?"

निष्कर्ष:- इस प्रकार ब्रज भाषा में आधुनिक बोध की रूपरेखा के अन्तर्गत कई नवीनतम प्रयोग हुये। डॉ. विष्णु विराट ब्रजभाषा कविता को सामाजिक संदर्भ से जोड़ने का अथक परिश्रम करते नजर आते हैं। परम्परित छंद रचना के द्वारा कवि आधुनिक काव्यधारा की प्रासंगिकता को नई दिशा प्रदान कर मध्यकालीन रूढ़ वैचारिकी के प्रति प्रयत्नशील रहें। सामयिक विषय पर, युगीन चेतना से संलग्न लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य दोनों ही ब्रजभाषा रचनाकारों ने आधुनिक बोध को दर्शाया है। परम्परित लोक गीतों में समयानुरूप ये चित्रण बड़े ही सहज रूप से उभरे हैं। उदाहरण-

"खेलो री देश प्रेम की होरी।
रंग संगठन को मिलि खेलो,त्याग की गगरी फोरी।
तीन रंग की लै पिचकारी,निर्भय होय बढोरी।
देखो अपनी-अपनी बारी खूब करो बरजोरी।।"

इस प्रकार ब्रजभाषा के कवि बदलते हुए परिवेश के सहारे ऐसे कई मनोभाव और उद्देश्य प्रस्तुत करते हैं जो आधुनिक बोध की पराकाष्ठा के संचालक सिद्ध होते हैं जिससे हिंदी साहित्य की ब्रजभाषा आधुनिक बोधयुक्त नवीन प्रयोग की आधारशिला दिखाई पड़ती है।

***शोधार्थी,**
हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, करौली
सम्बद्ध:- कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

सन्दर्भ :-

1) ब्रजभाषा के कृष्णभक्ति काव्य में अभिव्यंजना शिल्प- डॉ. सावित्री सिन्हा,नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1951

2) शौरसेनी भाषा की प्राचीन परम्परा -डॉ.सुनीति कुमार चटर्जी,पोहार अभिनंदन ग्रंथ,द्वितीय संस्करण,पृ.8

3) वही-पृ.81

4) हिंदी साहित्य का इतिहास - पंडित रामचन्द्र शुक्ल,नागरी प्रचारिणी सभा काशी,11

5) परमानंद सागर

6) राजस्थान के अज्ञात ब्रजभाषा कवि- सं.डॉ.विष्णुचन्द पाठक, भाग-2,पृ.62

7) राजस्थान के अज्ञात ब्रजभाषा साहित्यिकार-सं मोहनलाल मधुकर,पृ.261

8) अकबरी दरबार के हिंदी कवि - डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल,पृ.सं. 2007 वि.

9) अष्टछाप का सांस्कृतिक मूल्यांकन-डॉ.मायारानी टंडन, हिन्दी साहित्य भण्डार,लखनऊ, 1920

10) वही पृ.230

11) वही पृ.43

12) भक्तिकाव्य की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना-डॉ.प्रेमशंकर, मैकमोलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लि.पृ.सं.1979

13) रीतिकालीन कविता में भक्ति तत्त्व-डॉ.उषापुरी,पृ.100

14) रीति स्वछंद काव्यधारा-डॉ.कृष्णचंद्र वर्मा,कैलाश प्रकाशन,1967,पृ.201

15) वही 45

16) कविवर नवनीत जीवन और काव्य- डॉ. नंदलाल चतुर्वेदी,पृ. 61

17) मोहि ब्रज बिसरत नाहीं- गोपाल प्रसाद व्यास,पृ.60

18) वही-पृ.70

19) आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य- डॉ.माया प्रकाश पाण्डेय,पृ.110

20) वही-101